कुम्भ पर्व का सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक स्वरूप

डॉ. पंकज कुमार शर्मा (असिंस्टेंट प्रोफेसर)
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गङ्गानाथ झा परिसर
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

भारतवर्ष सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ऐसा केन्द्र बिन्दु है, जो सम्पूर्ण विश्व को सर्वप्रकारेण सुव्यवस्थित सञ्चालन करने का धर्म रखता है। यही धर्म सनातन धर्म कहलाता है। सनातन धर्म **'चिर पुरातन नित्य नूतन' है,** एवं प्रकृति की वैज्ञानिक गतिविधियों को भारतीय संस्कृति के रूप में व्यवहृत करता है। सूर्य प्रतिदिन अपनी किरणों से प्रकाश देता है, हम उसे यह जानते हुए भी कि सूर्य आज का नहीं है, कहते हैं सूर्य उदित हो रहा है, यही सनातन धर्म है। सनातन की गूढ वैज्ञानिकता को सामान्य लोगों के लिए सरलतम व्यवहार हेतु तत्त्वदर्शियों ने संस्कृति के रूप में सुस्थापित किया तथा इनका वैशिष्ट्य वैदिक ज्ञानराशि के रूप में प्रतिपादित किया। इन्हीं ज्ञानराशि से कुम्भ पर्व का स्वरूप प्राप्त होता है-

"चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि क्षीरेण पूर्णौं उदकेन दध्ना।

एतास्त्वा धारा उपयन्तु सर्वाः स्वर्गे लोकेमधुमत् पिन्वमाना"।।

(अथर्ववेद ४.३४.७)

अर्थात्- वर्तमान समय का चारों स्थानों हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन, एवं नासिक में कुम्भ का अमृतोत्सव होता है। इसके अतिरिक्त कुम्भ सम्बंधित अन्यान्य विवरण पुराण साहित्य एवं दन्त-कथाओं में भी प्राप्त होता है। कुम्भ पर्व की संस्कृति में कल्पवास का विधान होता है, कल्पवास का तात्पर्य विविध धार्मिक क्रियाकलाप से है, जिनमें से प्रमुख हैं-

1. एक मास की अवधि तक सामान्य मनुष्यों को प्रयागादि पवित्र तटों पर स्नान-ध्यान आदि का विधान।
2. शास्त्रार्थ आदि की परम्परा का आयोजन।
3. प्रसिद्ध आचार्यों द्वारा धार्मिक क्रियाकलापों की निर्णयात्मक गतिविधि।
4. अन्तः एवं बाह्य परिमार्जन हेतु विभिन्न प्रकल्पों का समायोजन।

दुर्भाग्यवश अद्यतन स्थिति में कुम्भपर्वों के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को पिकनिक केन्द्र बनाकर उसके स्वरूप को विकृत कर दिया गया है, जबकि इसकी वैज्ञानिकता यह है कि शरीर में स्थित आत्मा के प्रकाश को पहचानने के लिए ऋषियों ने मानव शरीर के अन्दर अमृतरस के कुण्डों को समझाने हेतु तिथि, ग्रह, नक्षत्र आदि के आधार पर इन स्थानों का वैशिष्ट्य बताया।

कुम्भ पर्व के उद्भव की कथा सांकेतिक विज्ञान है, जिसमें समुद्रमन्थन को आत्म-मंथन एवं अमृत कलश को अपने भीतर से ही प्राप्त करने का गूढ़ विज्ञान समाहित है। चेतना के दो रूप हैं- मन एवं आत्मा, मन चञ्चल एवं विक्षुब्ध है, जबकि आत्मा शान्त। अध्यात्म जब चिन्तन एवं विश्लेषण की चरम सीमा पर पहुंचा, तब उसे आत्मा एवं आत्मतत्व का साक्षात्कार हुआ। विश्लेषण की सहजता को सांकेतिकता में दिया गया, जिसमें कुम्भ पर्व भी एक है।

प्रयागराज में माघ मास में आयोजित कुम्भ सूर्य की किरणें गंगातट के स्निग्ध वातावरण को स्फूर्ति व चित्त को एकाग्रता, नक्षत्रीय विज्ञान से मन को शान्ति प्रदान कर आत्मान्वेषण की प्रवृत्ति को प्रादुर्भूत करती है।

प्रकृति के आधार पर कुम्भ का आयोजन धर्म की व्यवस्था का एक अंग है। प्रयागराज में गङ्गा यमुना के संङ्गम पर माघ मास में पञ्चतत्वों से अपने स्थूल शरीर का सन्तुलन करना, कल्पवास के रूप में कर्मजव्याधि का निरोध करना होता है। भारतीय संस्कृति में इसे जल चिकित्सा एवं सूर्यकिरण चिकित्सा के रूप में भी जाना जाता है। ज्योतिषविज्ञान के अनुसार **भचक्र ३६० अंश** अर्थात् **१०८ भाग होते हैं।** भचक्र १२ राशियों में विभक्त होते हैं, अतः ३० अंश अथवा ९ भाग की एक राशि होती है। चारों कुम्भ स्थान जिस राशि एवं लग्न से प्रारम्भ होते हैं, वह शौनकीयशाखोक्त विद्या के अनुसार नैऋर्तिदोष, क्षेत्रज व्याधि दोष, देवयजनदोष आदि का निवारण कर पाप-शाप-ताप मुक्त करता है। इन्हीं वैज्ञानिकताओं को स्कन्दपुराण आदि ने कुम्भ पर्व को कथा के रूप में प्रतिपादित किया, जिससे हम सभी सामान्य लोगों को इसका विज्ञान सामान्य रूप से समझ आ जाए।

यह अध्यात्म पूर्ण विज्ञान है। ध्यातव्य है कि कुम्भ पर्व है, उत्सव एवं त्यौहार नहीं, अतः सत्व बुद्धि एवं पूर्ण लाभ हेतु इसकी गहनता का मनन करना हम सभी का नैतिक कर्तव्य है।